International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(4): 246-248

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 246-248
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-06-2022
Accepted: 13-07-2022

चिरञ्जीत सरकार
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
चिरञ्जीत सरकार
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

अथर्ववेद में दाम्पत्य प्रेम

चिरञ्जीत सरकार

प्रस्तावना:-

अथर्ववेद में सदाचार एवं नैतिकता के अनेक तत्त्व मिलते हैं, जो व्यक्ति के जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बना देते हैं। नैतिकता के उन तत्त्वों में परस्पर मित्रभाव से रहना, पति-पत्नी में मैत्री-भावना इत्यादि देखने को मिलता है। पति-पत्नी की इस मैत्रीभाव से ही सम्पूर्ण संसार में सुख और शान्ति व्यापक रहती है। पति-पत्नी के मैत्रीभाव से ही आदर्श समाज का निर्माण होता है और आदर्श समाज से राष्ट्र की उन्नति होती है। अथर्ववेद कालीन समाज में पति-पत्नी में अपार प्रेम देखने को मिलता है, जैसे पति या पत्नी को अपने वश में रखना हो, एक-दूसरे का प्यार जीतने के लिए उपयुक्त कार्य करना हो, पत्नी को अपने मन के अनुकूल करने की प्रार्थना हो इत्यादि देखने को मिलता है।

गृहस्थाश्रम में प्रवेशार्थी के लिए आशीर्वचन:-

गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिए स्त्री और पुरुष का होना अनिवार्य है और इसीलिए सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने प्रत्येक स्त्री के लिए किसी एक पुरुष को जन्म दिया ही है।[1] गृहस्थाश्रम में प्रवेश की इच्छा करने वाले पुरुष दुर्भावनाओं का विनाश करने वाली तथा सद्भावनाओं से मन को जीतने वाली अप्सरा के समान सुन्दर गृहिणी की कामना करते है।[2] गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने वाली कन्या को आशीर्वचन देते हुए कहा गया है कि विवाह के बन्धन में बन्धकर गृहस्थ रूपी सौभाग्य की नौका पर आरूढ़ होकर तथा सदाचरण का पालन करते हुए पति और स्वयं को इस भव सागर से पार करे।[3] स्त्री को शीघ्र ही पति के साथ जीवन बिताने का सौभाग्य प्राप्त करने का आशीर्वचन भी मिलता है।[4]

---

[1] त्वष्टा जायाम् अजनयत् त्वष्टाऽस्यै त्वां पतिम्।
त्वष्टा सहस्रम् आयूंषि दीर्घम् आयुः कृणोतु वाम्॥ अथर्व.6/78/3

[2] उद्भिन्दतीं संजयन्तीम् अप्सरां साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि कृण्वानाम् अप्सरां ताम् इह हुवे॥ अथर्व.4/38/1

[3] भगस्य नावम् आरोह पूर्णामानुपदस्वतीम्।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः॥ अथर्व.2/36/5

[4] ओषं पत्या सौभगम् अस्त्वस्यै" अथर्व.2/36/1

इसके पश्चात् पति के साथ रहते हुए पुत्रों को जन्म देकर सौभाग्यवती होकर परिवार में राज करने के लिए अग्नि देव से निवेदन किया गया है-इयम् अग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति"।[5] पत्नी को आशीर्वाद देते हुए कहा है कि पत्नी श्वशुर के लिये तथा अपने पति के लिये सुख दायिनी हो।[6] पत्नी अपने पति के लिए माधुर्ययुक्त वचन वाली एवं शान्ति देने वाली हो -जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।[7] इस प्रकार पति-पत्नी का मन और हृदय परस्पर मिले रहने का तथा एक-दूसरे का ही चिन्तन करने का वर्णन मिलता है।

पत्नी का प्रेम:-

पति किसी परस्त्री के वश में होने पर सपत्नी को पराभूत करने के लिए एवं पति को अपना बनाने के लिए औषधि का प्रयोग करने का भी वर्णन मिलता है-सपत्नीं मे परा णुद पतिं मे केवलं कृधि"[8] । इसमें एक पत्नी का अपने पति के प्रति इतना अपार प्रेम है कि पत्नी स्वयं को अर्पित करती हुई कहती है कि तेरा मन मेरे पीछे उसी प्रकार दौड़ता रहेगा, जिस प्रकार गौ नवजात शिशु के पीछे भागती है।[9] पति का प्यार जीतने के लिए पत्नी अपने हाथों से निर्मित वस्त्र पति को पहनाती है।[10] इस प्रकार पत्नी अपने पति को प्रेम-पाश में बाँधके रखती है।

पति का प्रेम:-

पति अपने प्रेम भाव से पत्नी को सहभागी बनाके रखता है। अथर्ववेद संहिता में पत्नी को अपने वश में रखने का प्रार्थनाएँ भी देखने को मिलता है।[11] इसीप्रकार अन्यत्र कहते हैं 'मैं तुम्हें अपने हृदय में स्थान देता हूँ, जिससे तुम मेरे व्रत के समान व्रत वाली और मेरे मन के अनुकूल हो जाओ।'।[12] पति अपनी प्रिया से कहता है कि जिस प्रकार एक बेल वृक्ष के चारों ओर लिपट जाती है, उसी प्रकार 'तुम भी मुझसे लिपट जाओ, जिससे तुम कभी भी मुझसे दूर ना हो सको।'[13] और भी कहता है कि 'हे प्रिये! तुम मेरे शरीर, मेरी आँख आदि प्रत्येक अङ्गों से इतना प्रेम करो कि यदि हम किसी कारण वश कभी अलग हो भी जाएँ तो तुम्हारी ये आँखें मेरी प्रतीक्षा करें, तुम्हारे बाल संस्कार के अभाव में सुख जाएँ।'[14] गृहस्थ जीवन को बैल गाडी से तुलना करते हुए पति कहता है "कि जिस प्रकार गाडी खींचते समय बैल एक दूसरे के साथ रहते हैं, ठीक वैसे ही गृहस्थरूपी गाडी को चलाने के लिये तुम्हरा मन मेरे मन के साथ-साथ रहे" ।[15]

इस प्रकार देखा जाता है कि सुखी गृहस्थाश्रम बनाने के लिये पत्नी का जितना कर्तव्य होता है उतना ही कर्तव्य पति का भी होता है। पति-पत्नी दोनों के सहयोग से ही गृहस्थ में सुखों का उदय होता है।

पति-पत्नी में मैत्री-भावना:-

पति-पत्नी का सम्बन्ध लोक में मित्रता के रूप में प्रसिद्ध होना चाहिए। दोनों के सहयोग से विद्या की वृद्धि करनी चाहिए अपने समान दूसरों के भी सुख की कामना करनी चाहिए एवं धन की उन्नति करनी चाहिए। अथर्ववेद संहिता में पति-पत्नी को युद्ध में भी एक दूसरे का साथ न छोड़ने के लिये कहा गया है।[16] तत्कालीन समाज में पति-पत्नी का व्यवहार प्रेममय होता था और सदैव एक दूसरे को प्रसन्न करने के लिये प्रयत्न करते थे। कई स्थानों पर पति ईश्वर से प्रार्थना भी करता है कि उसकी पत्नी तन-मन से केवल उसी की होकर रहे, उसके अतिरिक्त किसी परपुरुष की कल्पना तक न करे।[17] पत्नी का मन पति की ओर उसी प्रकार आकर्षित होता रहे जिसप्रकार अश्व रथ को अपनी ओर खींचता।[18]

साथ ही पति-पत्नी को उपदेश दिया गया है कि 'तुम दोनों एक परिवार में सदैव एक साथ समानभाव से रहो'। गृहस्थ कर्मों में समान भाव से रहने के लिये कहा गया है, केवल गृहस्थाश्रम में नहीं अपीतु उपासना आदि कर्म में तथा मोक्ष

---

[5] अथर्व.2/36/3

[6] स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः" अथर्व.14/2/27

[7] अथर्व.3/30/2

[8] अथर्व.3/18/2

[9] माम् अनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु.....॥ अथर्व.3/18/6

[10] अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा।
यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन॥ अथर्व.7/37/1

[11] व्यस्यै मित्रावरुणौ..... ममैव कृणुतं वशे" अथर्व.3/25/6

[12] मम त्वा दोषणिश्रिषं कृणोमि हृदयश्रिषम्।
यथा मम क्रताव् असो मम चित्तम् उपायसि॥ अथर्व.6/9/2

[13] यथा वृक्षं लिबुजा समन्तं परिषस्वजे।
एवा परि ष्वजस्व मां यथा मां कामिन्यसो यथा मन् नापगा असः॥ अथर्व.6/8/1

[14] वाञ्छ मे तन्वं पादौ वाञ्छाक्ष्यौ३ वाञ्छ सक्थ्यौ।
अक्ष्यौ वृषण्यन्त्याः केशा मां ते कामेन शुष्यन्तु॥ अथर्व.6/9/1

[15] यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते।
एवा माम् अभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम्॥ अथर्व.6/102/2

[16] अथर्व.11/49

[17] एवा मथ्नामि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथा मन् नापगा असः" अथर्व.2/30/1

[18] आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिव" अथर्व.6/102/2

मार्ग में भी पति-पत्नी को एक साथ चलने की बात की गई है।[19] इसप्रकार परस्पर मित्रता का व्यवहार करते हुए घर को स्वर्ग बनाने का सन्देश दिया गया है ।

वेद पत्नी को पति के आदेशानुसार चलने, उसके मन के अनुसार कार्य करने एवं पति से कभी विरोध न करने का निर्देश देता है-" संप्रिया पत्याविराधयन्ती"[20] पति-पत्नी का हृदय परस्पर मिला हुआ होना चाहिए, उन दोनों को एक-दूसरे का ही चिन्तन करना चाहिए। पति-पत्नी का प्रेम इतना प्रबल हो कि दोनों एक-दूसरे के हृदय को उसी प्रकार हिला दे जैसे वायु तिनके को हिला देती है। एक दाम्पत्य जीवन का लक्ष्य राष्ट्र की सेवा होनी चाहिए साथ ही धन-धान्य आदि ऐश्वर्य को प्राप्त करना चाहिए।[21]

इस प्रकार दम्पती को पारिवारिक, सामाजिक उन्नति के साथ-साथ राष्ट्रोन्नति का भी ध्यान रखना चाहिये।

निष्कर्ष-

उपर्युक्त सन्दर्भ से प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषि द्वारा दिया गया निर्देश वर्तमान समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। परिवार को मानव समाज का मूल माना जाता है, क्योंकि परिवार से ही एक समाज का निर्माण होता है। जिस परिवार में बड़ों का आदर सम्मान होता है, समान आयु के लोगों से प्रेम होता है, पति-पत्नी में मित्र-भाव होता है, सदैव एक दूसरे के साथ देते हैं, निश्चित रूप से वह परिवार एक आदर्श परिवार कहलाता है। इसीकारण आदर्श समाज निर्माण के लिए आदर्श परिवार का होना अत्यन्त आवश्यक है और एक आदर्श परिवार का निर्माण पति-पत्नी के सद्-व्यवहार एवं कर्तव्यों से ही होता है। आदर्श परिवार होने पर समाज की उन्नति होती है और समाज की उन्नति होने पर ही राष्ट्र की उन्नति होती है। आदर्श परिवार में ही उत्तम संस्कारवान् सन्तान होता है, जो समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करता है। इसी कारण वैदिक ऋषियों ने आदर्श परिवार निर्माण के लिए पति-पत्नी के आदर्श प्रेम सम्बन्धित मन्त्रों का साक्षात्कार किया हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि अथर्ववेद में प्रतिपादित दाम्पत्य जीवन शैली को अपनाया जाए तो निश्चित रूप से एक आदर्श मानव समाज का निर्माण होगा।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. अथर्ववेद संहिता, माधवाचार्य शास्त्री, माधव पुस्तकालय, दिल्ली 1935
2. अथर्ववेद का सुबोध भाष्य, पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्यायमण्डल पारडी,1958
3. अथर्ववेदभाष्य, प्रो. विश्वनाथ विद्यालङ्कार, वैदिकपुस्तकालय, राजस्थान, वि.सं. 2070
4. वेदामृतम् : वैदिक मनोविज्ञान, डां.कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही) 2015
5. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डां कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2015
6. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, उपाध्याय बलदेव, शारदा संस्थान, वाराणसी 2015
7. वैदिक वाङ्मय का इतिहास, रमाकान्त शास्त्री, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी 1998

[19] समस्मिँल्लोके समु देवयाने सं स्मा समेतं यमराज्येषु।
पूतौ पवित्रैरुप तद्ध्वयेथां यद्यद्रेतो अधि वां संबभूव॥ अथर्व.12/3/3

[20] अथर्व.2/36/4

[21] अभि वर्धतां पयसाऽभि राष्ट्रेण वर्धताम्।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ॥ अथर्व.6/78/2